

लम्पी स्किन डिज़ीज़ : दुधारू पशुओं के लिए अभिशाप

(*डॉ. केशव)

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली

*संवादी लेखक का ईमेल पता: drkeshav.kumar689@gmail.com

भारत की बड़ी आबादी पशुपालन से जुड़ी हुई है इसलिए पशुओं में जब कोई संक्रामक बीमारी फैलती है तो उसका एक भारी भरकम नुकसान पशुपालकों को उठाना पड़ता है। हाल ही में देश के विभिन्न भागों में "लम्पी स्किन डिज़ीज़" नामक बीमारी देखी गयी है।

रोगजनक

यह एक विषाणु जनित तीव्र संक्रामक बीमारी है जो कि संक्रमित पशु से स्वस्थ पशुओं में प्रसारित होती है। यह बीमारी गाय और भैंस में मुख्यतया देखी गयी है। इस बीमारी का कारण कैप्रीपॉक्स विषाणु (Capripox virus) नामक रोगजनक है जो कि मच्छरों और कीड़े मकोड़ों और जूँ के माध्यम से एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है। संक्रमित पशु के सम्पर्क में आने पर भी स्वस्थ पशुओं में इसका प्रसार हो सकता है।

लक्षण

संक्रमण होने के 2-4 हफ्तों के बाद लक्षण दिखायी देते हैं। लम्पी स्किन डिज़ीज़ में तेज बुखार के साथ साथ पशु के शरीर के विभिन्न भागों में 2 से 5 सेंटीमीटर व्यास की दर्दनाक गाँठें बनने लगती हैं लेकिन जिस भाग पर छोटे बाल हैं और त्वचा कोमल है, वहाँ ज़्यादा गाँठें दिखायी देती हैं मुख्यतः सिर, गर्दन, थनों और जननांगों के पास। ये गाँठें धीरे धीरे एक बड़े और गहरे घाव का रूप ले लेती हैं। अत्यधिक लार स्राव तथा नाक और आँखों से भी पानी निकलने लगता है जो कि संक्रमण का कारण बनता है। संक्रमित पशुओं का दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है तथा दाना चारा खाना भी कम हो जाता है जिससे पशु कमजोर हो जाता है। त्वचा के घाव कई दिनों या महीनों तक बने रह सकते हैं। कुछ मामलों में पशु में लंगड़ापन, गर्भपात और बाँझपन भी हो सकता है। कई मामलों में पशु की मृत्यु भी हो जाती है। हालाँकि मृत्यु दर 10% से भी कम है।

उपचार

विषाणुजनित संक्रमण होने के कारण इसका कोई प्रभावी उपचार नहीं है लेकिन त्वचा में द्वितीयक संक्रमणों का उपचार गैरस्टेरोईडल एंटी इन्फ्लैमेटॉरी और एंटीबायोटिक दवाओं से किया जा सकता है। अगर समय रहते इलाज करवा लिया जाए तो लक्षणों के आधार पर उपचार करने पर अधिकतर पशु स्वस्थ हो जाते हैं और पशु में इस बीमारी के प्रति प्रतिरक्षा भी विकसित हो



जाती है। पशुपालक संक्रमित घाव को एक प्रतिशत पोटेशियम परमेगनेट (लाल दवा) के घोल से साफ़ करके एंटीसेप्टिक मलहम लगाकर संक्रमण को रोका जा सकता है।

रोकथाम

1. इस बीमारी के लिए फ़िलहाल कोई टीका उपलब्ध नहीं है।
2. फार्म में सख़्त जैव सुरक्षा उपायों को अपनाया जाना चाहिए।
3. प्रभावित क्षेत्रों से पशुओं के आवागमन को रोकना चाहिए। संक्रमित पशु को बाक़ी स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए तथा उसका चारा, पानी बाक़ी पशुओं से अलग रखा जाना चाहिए। इसके साथ ही मच्छरों और मक्खियों के नियंत्रण के लिए उचित कीटनाशकों का उपयोग करना चाहिए।
4. फार्म और आसपास के क्षेत्रों में साफ़ सफ़ाई का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।
5. इस बीमारी के लिए वर्तमान में बकरी के चेचक के टीके के उपयोग को सहमती मिली है।
6. स्वस्थ पशुओं में टीकाकरण सर्वोत्तम उपाय है।
7. इसके अलावा पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए सूखे आँवले और गिलोय की पत्तियाँ पशु को खिलायी जानी चाहिए।
8. फिटकरी और नीम के पत्तों का लेप बनाकर संक्रमित पशु के शरीर पर लगाया जाना चाहिए।